IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Study Of Paintings Of A Particular Region Or Period (E.G., Mughal Paintings, Rajasthani Paintings, Etc.)

किसी विशेष क्षेत्र या काल की चित्रकला (जैसे, मुगल चित्रकला, राजस्थानी चित्रकला, आदि) का अध्ययन

Author – Narendra Sahu, Assistant Professor- Drawing, Government Girls College, Nagar Fort, Tonk, Rajasthan

Abstract : मुगल एवं राजस्थानी चित्रकला भारतीय चित्रकला की दो प्रमुख और विशिष्ट धाराएँ हैं, जिनका विकास विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में हुआ। मुग़ल चित्रकला का उद्भव 16वीं शताब्दी में मुग़ल सम्राटों के संरक्षण में हुआ, जिसमें फारसी, तुर्क और भारतीय कलात्मक परंपराओं का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। यह शैली यथार्थवाद, सूक्ष्म रेखांकन, प्राकृतिक दृश्यों और शाही जीवन के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। वहीं, राजस्थानी चित्रकला का विकास विभिन्न राजपूत रियासतों जैसे मेवाड़, मारवाड़, कोटा, बूंदी, बीकानेर और किशनगढ़ में हुआ, जो भारतीय लोकसंस्कृति, भक्ति आंदोलन और पौराणिक आख्यानों से प्रेरित थी। दोनों शैलियों ने एक–दूसरे को प्रभावित किया मुग़ल शैली से राजस्थानी चित्रों में तकनीकी परिष्कार आया, जबकि राजस्थानी शैली से मुग़ल चित्रों में धार्मिक भाव और जीवंतता का समावेश हुआ। प्रमुख चित्रकारों, चित्रशालाओं और कलाकृतियों के योगदान से इन शैलियों ने भारतीय चित्रकला की विरासत को समृद्ध किया। यह अध्ययन इन दोनों परंपराओं के ऐतिहासिक विकास, शैलीगत विशेषताओं, परस्पर प्रभावों और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करता है, जो भारतीय कला की विविधता और गहराई को दर्शाता है।

Keywords : मुगल चित्रकला, राजस्थानी चित्रकला, क्षेत्रीय चित्रकला, पारंपरिक भारतीय कला, लघुचित्र शैली, अकबरकालीन चित्रकला, जहाँगीरी शैली, शाहजहाँकालीन कला, फारसी प्रभाव, भारतीय सांस्कृतिक चित्रण, ऐतिहासिक चित्रकला, धार्मिक आख्यान, दरबारी दृश्य, चित्रकला तकनीक, रंग संयोजन, लघुचित्र परंपरा, कला संरक्षण, मुगल दरबार, चित्र विषयवस्तु, कलात्मक अभिव्यक्ति, चित्रकला में प्रकृति।

Article : भारतीय चित्रकला की समृद्ध परंपरा में मुग़ल और राजस्थानी चित्रकला दो अत्यंत महत्वपूर्ण धाराएँ हैं, जिनका उद्भव अलग–अलग सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक संदर्भों में हुआ। ये दोनों चित्रकला शैलियाँ न केवल अपने सौंदर्यशास्त्रीय मूल्यों के लिए जानी जाती हैं, बल्कि इनके ऐतिहासिक विकास ने भारतीय कला के विस्तार में गहरा योगदान दिया है।

मुगल एवं राजस्थानी चित्रकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मुगल चित्रकला का आरंभ 16वीं शताब्दी में मुगल सम्राट बाबर के भारत आगमन के बाद हुआ, लेकिन इसका वास्तविक विकास सम्राट अकबर (1556–1605) के शासनकाल में देखा गया। अकबर ने फारस से आये चित्रकारों अब्दुस समद और मीर सैयद अली को अपने दरबार में आमंत्रित किया और एक संगठित चित्रशाला की स्थापना की। उन्होंने फारसी मिनिएचर कला को भारतीय लोक एवं परंपरागत कला शैलियों से जोड़ते हुए एक नवीन चित्रकला शैली का निर्माण किया। इस युग में ऐतिहासिक ग्रंथों जैसे 'अकबरनामा', 'हमज़ानामा', 'रामायण', और 'महाभारत' का सचित्र संस्करण तैयार किया गया, जो न केवल चित्रकला के कलात्मक पक्ष को दर्शाता है, बल्कि तत्कालीन सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन का भी परिचय देता है।

जहाँगीर (1605–1627) के काल में मुगल चित्रकला और अधिक परिष्कृत हुई। उन्होंने प्रकृति, पक्षियों, फूलों और मानव चित्रण में विशेष रुचि दिखाई। उनके शासनकाल में चित्रकला यथार्थवाद की ओर उन्मुख हुई और इसमें गहरी सूक्ष्मता तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति का समावेश हुआ। शाहजहाँ (1628–1658) के काल में मुगल चित्रकला ने भव्यता और सौंदर्य की चरम सीमा को छुआ, जबकि औरंगज़ेब के शासन में इस कला को राजकीय संरक्षण से वंचित होना पड़ा। इसके बाद मुगल चित्रकला का प्रभाव क्षेत्रीय चित्रशैलियों पर व्यापक रूप से पड़ा, विशेषतः राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला पर।

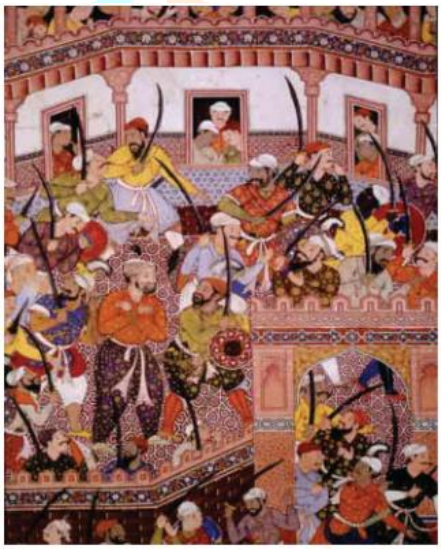

चित्र : हम्जा नामा

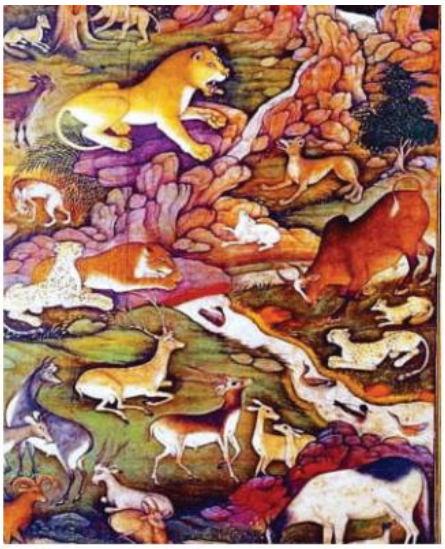

चित्र : अनवार ए सुहैली

चित्र : विविध पक्षी व टर्की बाज

राजस्थानी चित्रकला का विकास मुगल चित्रकला के समांतर हुआ, किंतु इसकी जड़ें अधिक गहराई तक भारतीय परंपरा में रची–बसी थीं। यह चित्रशैली 16वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य विभिन्न राजपूत रियासतों जैसे मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, बीकानेर, जयपुर और किशनगढ़ में विकसित हुई। राजस्थानी चित्रकला को धार्मिक भक्ति आंदोलन, विशेषतः कृष्णभक्ति और रामकथा ने प्रमुख रूप से प्रभावित किया। इन चित्रों में

स्थानीय जीवन, लोकविश्वास, प्रेमकथाएँ, युद्ध, शिकार, नृत्य, और त्योहारों को अत्यंत रंगीन और अलंकरणयुक्त रूप में चित्रित किया गया। राजस्थानी चित्रकला की विशिष्टता इसके गहरे, चमकीले रंगों, मोटी रेखाओं, सममित संरचना और प्रतीकात्मकता में निहित है। इसकी शैली में मुगल चित्रकला का प्रभाव अवश्य देखने को मिलता है, परंतु राजस्थानी कला ने अपने आत्मिक और सांस्कृतिक स्वरूप को अक्षुण्ण रखा। किशनगढ़ शैली में बनी 'बनी–ठनी' जैसी चित्रकृतियाँ इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं, जिनमें स्त्री सौंदर्य और भक्ति भाव का अनोखा संगम मिलता है।

मुगल और राजस्थानी चित्रकला की शैलीगत विशेषताएँ

मुगल और राजस्थानी चित्रकला भारतीय चित्रकला की दो प्रमुख शैलियाँ हैं, जो भिन्न राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमियों में विकसित हुईं। दोनों चित्रकला परंपराएँ अपनी–अपनी शैलीगत विशेषताओं के कारण विशिष्ट स्थान रखती हैं। यद्यपि मुगल चित्रकला ने फारसी और मध्य एशियाई प्रभावों को आत्मसात किया, वहीं राजस्थानी चित्रकला ने भारतीय लोक और धार्मिक परंपराओं को अपनी आत्मा बनाया। इन दोनों शैलियों की शैलीगत विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय चित्रकला की विविधता और समृद्धता को समझने में सहायक सिद्ध होता है। मुगल चित्रकला की शैलीगत विशेषताओं की बात करें तो यह मुख्यतः दरबारी और ऐतिहासिक चित्रण पर केंद्रित रही। इसमें सूक्ष्म रेखांकन, यथार्थपरक दृष्टिकोण, प्राकृतिक दृश्यों की सजीवता और भावनात्मक गहराई विशेष रूप से दिखाई देती है। चित्रों में रंगों का संयोजन अत्यंत संतुलित, सौम्य और संयमित होता था। मुगल चित्रकारों ने छायांकन, परिप्रेक्ष्य और प्रकाश–छाया के माध्यम से चित्रों में गहराई और गतिशीलता उत्पन्न की। मानव आकृतियाँ अत्यंत सूक्ष्म, यथार्थ और अभिव्यक्तिपूर्ण होती थीं। वस्त्रों की बारीकी, आभूषणों का अलंकरण, चेहरे के भाव और प्राकृतिक तत्व जैसे पक्षी, वृक्ष, नदी आदि को चित्रित करने में विशेष कौशल दिखाया गया। जहाँगीर के काल में प्रकृति और वन्य जीवन के चित्रण को विशेष प्रोत्साहन मिला, जिससे वनस्पतियों और जीव–जंतुओं के सजीव चित्रण सामने आए। विषयवस्तु की दृष्टि से मुगल चित्रकला में ऐतिहासिक ग्रंथों, युद्ध, दरबारी दृश्य, प्रेम प्रसंग, शिकार के दृश्य, एवं राजकीय घटनाओं को प्रमुखता दी गई। चित्रों में फ़ारसी, तुर्क और भारतीय परिधानों का मिश्रण स्पष्ट देखा जा सकता है।

राजस्थानी चित्रकला की शैलीगत विशेषताएँ इससे भिन्न और अधिक लोकसंस्कृति से जुड़ी हुई हैं। इसकी सबसे प्रमुख विशेषता है – इसकी जीवंत रंग योजना। इसमें लाल, पीला, हरा, नीला जैसे गहरे और चटख रंगों का प्रचुर प्रयोग किया गया है। रेखाएँ मोटी और स्पष्ट होती हैं, जो चित्रों को एक सशक्त दृश्य रूप देती हैं। चेहरे आमतौर पर गोल, बड़ी आँखों और नुकीली नाक वाले होते हैं। स्त्रियाँ लंबे और लचीले गले, पतली कमर और पारंपरिक वस्त्रों में चित्रित की जाती हैं। पुरुषों के वस्त्र और अस्त्र–शस्त्र भी विस्तारपूर्वक दिखाए जाते हैं। राजस्थानी चित्रकला की विषयवस्तु मुख्यतः धार्मिक, पौराणिक और प्रेमप्रधान होती है। कृष्ण–राधा की लीलाएँ, रामकथा, बारहमासा, रागमाला, मेले, त्योहार, शिकार, प्रेम–प्रसंग और नृत्य–गान इसके प्रमुख विषय हैं। प्रत्येक राजपूत रियासत जैसे मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, बीकानेर, जयपुर और किशनगढ़ की अपनी–अपनी विशिष्ट शैली विकसित हुई, जिनमें स्थानीय परंपराओं, परिधान, स्थापत्य और सामाजिक जीवन की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है। किशनगढ़ की 'बनी–ठनी' शैली भावप्रवण सौंदर्य चित्रण का उत्तम उदाहरण मानी जाती है। राजस्थानी चित्रकला में प्रतीकात्मकता और भावुकता का समन्वय देखने को मिलता है। इसमें धार्मिक भावनाओं की प्रबलता, रचनात्मक कल्पना, समृद्ध लोक परंपरा और रंगों की सजगता दिखाई देती है। चित्रों में परिप्रेक्ष्य की बजाय समतल पृष्ठभूमि और प्रतीकात्मक दृश्यावली का प्रयोग होता है। यह शैली मंदिरों, महलों और दीवारों तक फैली हुई थी, और इसका उपयोग धार्मिक ग्रंथों की सज्जा तथा भित्ति चित्रों में किया गया।

प्रमुख चित्रकार, चित्रशालाएँ एवं प्रसिद्ध चित्रकृतियाँ

भारतीय चित्रकला के इतिहास में मुग़ल और राजस्थानी चित्रकला शैलियों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इन दोनों शैलियों के विकास में अनेक कुशल चित्रकारों, राजाओं द्वारा स्थापित चित्रशालाओं और कलात्मक संरचनाओं ने निर्णायक भूमिका निभाई। इन चित्रकारों ने न केवल उत्कृष्ट कलाकृतियाँ प्रस्तुत कीं, बल्कि उन्होंने भारतीय चित्रकला की परंपरा को समृद्ध और सजीव बनाए रखा। उनके द्वारा निर्मित चित्रकृतियाँ आज भी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की अमूल्य निधि के रूप में संग्रहालयों और शोधों का केंद्र हैं। मुगल चित्रकला की परंपरा में प्रारंभिक और सबसे प्रसिद्ध चित्रकारों में अब्दुस समद और मीर सैयद अली का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। ये दोनों चित्रकार सम्राट अकबर के निमंत्रण पर फारस से भारत आए थे और उन्होंने 'हमज़ानामा' जैसे महत्त्वाकांक्षी ग्रंथ का चित्रांकन किया। यह ग्रंथ विशाल आकार, रंगों की विविधता और कल्पनाशीलता के लिए जाना जाता है। बाद में भारतीय चित्रकारों को भी प्रशिक्षित किया गया, जिससे मुग़ल चित्रकला में भारतीय तत्वों का समावेश हुआ।

बिशनदास, गोवर्धन, मनोहर, दसवंत और खेमकरण जैसे चित्रकार अकबर और जहाँगीर के समय में प्रसिद्ध हुए। इनमें दसवंत पहले भारतीय चित्रकार माने जाते हैं जिन्होंने मुग़ल शैली में विशिष्ट योगदान दिया। बिशनदास जहाँगीर के दरबार में विशेष रूप से ख्यातिप्राप्त थे और उनके बनाए गए दरबारी चित्र अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थपरक होते थे। गोवर्धन ने वृद्धावस्था, दार्शनिक मुद्रा और मानवीय विविधताओं को बहुत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया। प्रसिद्ध मुग़ल चित्रकृतियों में अकबरनामा, जहाँगीरनामा, शाहनामा, रज़्मनामा, बाबरनामा आदि अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं जिनमें शाही जीवन, युद्ध, समारोह, शिकार और प्रकृति के चित्रों का विशद चित्रण है। इनमें से 'जहाँगीर का सिंहासन पर बैठना', 'जहाँगीर की मलिक अंबर से भेंट' तथा 'पक्षी का अध्ययन करते हुए जहाँगीर' जैसी चित्रकृतियाँ विश्वस्तरीय कृतियाँ मानी जाती हैं।

राजस्थानी चित्रकला की परंपरा में भी अनेक महत्वपूर्ण चित्रकारों और चित्रशालाओं का योगदान उल्लेखनीय है। यद्यपि इन चित्रकारों के नाम अक्सर अज्ञात रह गए, फिर भी कुछ चित्रकारों जैसे साहिबदिन (मेवाड़), दालचंद (जयपुर), निहालचंद (किशनगढ़) के नाम चित्रकला इतिहास में विशेष रूप से दर्ज हैं। साहिबदिन द्वारा चित्रित 'भागवत पुराण' और 'रामायण' श्रृंखला चित्रों में गहरी धार्मिक भावना और रंगों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। निहालचंद, किशनगढ़ शैली के प्रमुख चित्रकार माने जाते हैं, जिन्होंने बनी–ठनी श्रृंखला की चित्रकृतियों के माध्यम से स्त्री सौंदर्य और भक्ति भावना का अनुपम समन्वय प्रस्तुत किया। 'बनी–ठनी' को भारतीय मोनालिसा भी कहा जाता है, जो अपनी भावभीनी दृष्टि और सौंदर्यबोध के लिए प्रसिद्ध है।

राजस्थानी चित्रशालाएँ प्रायः राजदरबारों से जुड़ी होती थीं। मेवाड़, बूंदी, कोटा, बीकानेर, जयपुर और किशनगढ़ जैसे राज्यों में अलग–अलग शैली की चित्रशालाएँ विकसित हुईं, जिनका प्रत्येक केंद्र अपनी विशेषताओं के लिए जाना गया। कोटा और बूंदी की चित्रशालाओं में शिकार, युद्ध और दरबारी जीवन के चित्र अत्यंत प्रसिद्ध हुए, वहीं जयपुर में रागमाला और धार्मिक श्रृंखलाओं की चित्रकृतियाँ अधिक प्रचलित रहीं। राजस्थानी चित्रकला की प्रसिद्ध कृतियों में 'रागमाला चित्रमाला', 'बारहमासा श्रृंखला', 'भागवत पुराण', 'गीता गोविंद', 'रामायण', तथा 'कृष्णलीला' पर आधारित चित्रों को प्रमुखता दी जाती है। इन चित्रों में केवल धार्मिक भाव ही नहीं, बल्कि लोकजीवन, ऋतु परिवर्तन, प्रेम, सौंदर्य का सजीव चित्रण मिलता है।

मुगल एवं राजस्थानी चित्रकला का परस्पर प्रभाव और विरासत

भारतीय चित्रकला की विविध परंपराओं में मुगल और राजस्थानी चित्रकला दो अत्यंत समृद्ध और प्रभावशाली धाराएँ रही हैं। इन दोनों शैलियों ने न केवल स्वतंत्र रूप से अपना विकास किया, बल्कि एक–दूसरे को प्रभावित भी किया। इनका पारस्परिक प्रभाव उस ऐतिहासिक कालखंड का द्योतक है, जब कला ने राजनीतिक सीमाओं को लांघकर सांस्कृतिक संवाद की भूमिका निभाई। मुगल चित्रकला ने जहाँ एक ओर शाही संरचना, यथार्थवाद और फारसी परंपराओं को आत्मसात किया, वहीं राजस्थानी चित्रकला ने भारतीय लोकसंस्कृति, धार्मिक भक्ति और परंपरागत प्रतीकात्मकता को जीवंत बनाए रखा। दोनों की परस्पर क्रिया ने भारतीय चित्रकला को एक नया विस्तार और गहराई प्रदान की। मुगल चित्रकला का प्रभाव राजस्थानी चित्रकला पर

विशेष रूप से 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से दिखने लगता है। राजपूत रियासतों के शासकों ने जब मुगलों के साथ राजनैतिक और सांस्कृतिक संबंध बनाए, तब उन्होंने मुगल दरबार की कलात्मक परंपराओं को अपनाना आरंभ किया। कई राजपूत शासक जैसे कि आमेर के राजा मानसिंह, बीकानेर के रायसिंह, और कोटा–बूंदी के शासकों ने मुगल दरबार में सेवा की और वहाँ की कलात्मक भव्यता से प्रभावित होकर अपने राज्यों में चित्रशालाओं की स्थापना की। मुगल शैली के चित्रकारों को राजस्थानी दरबारों में आमंत्रित किया गया, जिससे दोनों शैलियों के बीच तकनीकी और विषयगत आदान–प्रदान हुआ। इस पारस्परिक प्रभाव के कारण राजस्थानी चित्रकला में सूक्ष्म रेखांकन, छायांकन, परिप्रेक्ष्य और यथार्थवाद जैसे तत्व सम्मिलित हुए, जो मूलतः मुगल चित्रकला के गुण थे। उदाहरणस्वरूप, बीकानेर और जयपुर की चित्रकला में मुगल शैली के रंग संयोजन, आकृतियों की आकृति–विन्यास, और स्थापत्य शैली के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं। बीकानेर की चित्रकला में तो कई बार यह अंतर कर पाना कठिन होता है कि चित्र मुगल शैली का है या राजस्थानी शैली का, क्योंकि दोनों के तत्व इतने प्रभावशाली रूप से समाहित हैं। दूसरी ओर, राजस्थानी चित्रकला ने भी मुगल चित्रकला को प्रभावित किया। विशेष रूप से मेवाड़ और बूंदी की चित्रशैलियों में जो जीवंतता, रंगों की गहराई, धार्मिक विषयवस्तु और लोक संवेदना देखने को मिलती है, उसका प्रभाव मुगल चित्रों में भी देखा जा सकता है। जहाँगीर के शासनकाल में चित्रों में भावनात्मकता और आध्यात्मिक सौंदर्य की जो प्रवृत्ति विकसित हुई, वह आंशिक रूप से राजस्थानी धार्मिक कला के प्रभाव का परिणाम थी।

राजस्थानी चित्रकला में कृष्णभक्ति पर आधारित चित्रकृतियाँ अत्यंत लोकप्रिय रहीं, जैसे रासलीला, बरहमासा, रागमाला आदि। इन विषयों की जीवंतता और सौंदर्य से मुग़ल चित्रकार भी प्रभावित हुए, और उन्होंने कई बार हिंदू देवी–देवताओं, संगीत रागों और ऋतु चक्र पर आधारित चित्रों को अपनाया। इस प्रकार, राजस्थानी चित्रकला ने मुगल चित्रकला के विषय–विस्तार में भी अप्रत्यक्ष योगदान दिया। मुगल और राजस्थानी चित्रकला की यह परस्पर क्रिया केवल तकनीकी और विषयगत स्तर तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसकी विरासत भारतीय चित्रकला की दीर्घकालिक प्रवृत्तियों में भी देखी जा सकती है। आज भी इन चित्रशैलियों की झलक आधुनिक मिनिएचर कला, फोक पेंटिंग्स और संग्रहालयों की प्रदर्शनियों में देखी जा सकती है। भारत और विश्व के विभिन्न कला संस्थानों में इन चित्रकृतियों का संरक्षण, अध्ययन और प्रदर्शन इस बात का प्रमाण है कि इनकी सांस्कृतिक विरासत आज भी जीवित और प्रासंगिक है।

Conclusion : मुगल चित्रकला का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह कला शैली न केवल सौंदर्यबोध की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध थी, बल्कि इसमें तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का जीवंत चित्रण भी मिलता है। मुगल चित्रकला ने भारतीय कला को एक नया आयाम दिया, जिसमें फारसी सूक्ष्मता और भारतीय भावप्रवणता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। विभिन्न मुगल शासकों के काल में इस चित्रकला ने विविध विषयों, रंगों और तकनीकों में विस्तार पाया। खासकर अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के काल में यह शैली अपनी पूर्णता पर पहुँची। चित्रों में यथार्थ के साथ–साथ कल्पना, प्रतीकात्मकता और सौंदर्य का सम्मिलन हुआ, जो इसे विशिष्ट बनाता है।

References :

1. कृष्णा चैतन्य (1994), भारतीय लघुचित्रकला, राष्ट्रीय पुस्तक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
2. अजीत घोष (2001), भारतीय चित्रकला का इतिहास, ग्रंथशिल्पी, कोलकाता।
3. लक्ष्मीपति त्रिपाठी (2010), राजस्थानी चित्रकलाः एक अनुशीलन, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
4. सत्यप्रकाश (1998), मुग़ल चित्रकला का सौंदर्यशास्त्र, साहित्य भवन, आगरा।
5. विद्या देहलीकर (2005), भारतीय कला और चित्र परंपरा, ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद।